9999248014

(1)

Dr. Krishan Dev Agrawal "Arvind"
M.A. (Hindi, Eng., Sank.), M.Ed., Ph.D. (Sankt.), Ayu. Ratna

WRITER & EDUCATIONIST

Patron : Indraprastha Press Club (Regd.), Delhi
Founder : Indraprastha Sewa Samiti (Regd.), Delhi
Millennium Health Care Society of India (Regd.), Delhi
Bhai Parmanand Education Society (Regd.), Delhi
Arvind Education & Vocational Society (Regd.), Delhi

काशी मरणान्मुक्ति

19.11.12

① देह में निहित यदि होता नहीं ज्ञान निज आत्मा का,
वही तो इक अज्ञान और अंधकार कहलाता है।
हो जाता है पूर्ण ज्ञान आत्मा का भीतर से यदि,
वही तो प्रकाश का आधार अनन्त कहलाता है॥
करता है प्राप्त मृत्यु काशी विश्वनाथ में जो,
हरेक बन्धन से मुक्त हो, मुक्ति को पा जाता है।
विश्वनाथ की ज्योति में होकरके समाहित कोई,
अपना अस्तित्व त्याग, खुद विश्वनाथ बन जाता है॥
फाफामाऊ के श्मशान में छुपा हरी चुन्नी में,
लोक-लाज-भय से ही, मात्र नवजात शिशु लाई थी।
विश्वनाथ के भरोसे ही, उठाया था कदम बड़ा,
दहकती चिता के पास, वह ब्राह्मणी रख आई थी॥
विश्वनाथ जी का नाग एक फैलाए अपना फन,
उस नवजात असहाय शिशु की, रक्षा कर पाया था।
निज भोजन की खोज में भ्रमते श्वानों और शृगालों से,
उस पंचतत्वी जीव को, उस नाग ने बचाया था॥
श्मशान से कुछ दूर ही बनी थी इक पर्ण-कुटी,
राघव-यशोदा-दम्पति, निःसन्तान अभागे थे।
हो विश्वनाथ के प्रति नास्तिक कोसती यशोदा फिर,
मरने चली गंगा में, पर भाग्य उसके जागे थे॥
हरी चुन्नी में छिपा तभी देखा इक लाल रोता,
तुरन्त उठाकर उसे, अपने हृदय से लगाया था।
काशीवास-मरणान्मुक्ति का जाना रहस्य उसने,
प्रमाण स्वरूप काला नाग जाता हुआ पाया था॥

② पाँच सौ दो पृष्ठों और उनहत्तर अध्यायों में,
अध्यात्म-भक्ति के गागर में सागर लहराया है।
साध्य काशी-मरणान्मुक्ति द्वारा आदि से अन्त तक,
चाण्डाल महा को ही इक महा साधन बनाया है॥

Residence : C-112, Gali No. 7, Majlis Park, Adarsh Nagar, Delhi-110033 Ph.: 9868504858, 27672380
9999248014 011-27672612

Dr. Krishan Dev Agrawal "Arvind"
M.A. (Hindi, Eng., Sank.), M.Ed., Ph.D. (Sankt.), Ayu. Ratna

WRITER & EDUCATIONIST

Patron : Indraprastha Press Club (Regd.), Delhi
Founder : Indraprastha Sewa Samiti (Regd.), Delhi
Millennium Health Care Society of India (Regd.), Delhi
Bhai Parmanand Education Society (Regd.), Delhi
Arvind Education & Vocational Society (Regd.), Delhi

स्माइल, भूतनाथ और जूरी के सहयोग से हो,
महा ने माता-पिता के संग जीवन बिताया था।
माता के जाने से उत्पीड़ित और उद्विग्न हो,
नास्तिक हो विश्वनाथ प्रति, काशी छोड़ आया था।।
हरि की पौढ़ी पर अचानक मेल हुआ बुद्धेश से,
मानो दोनों ने ही एक समान लक्ष्य पाया था।
द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग-दर्शन व चार धाम-यात्रा हेतु,
गोरा नवयुवक बुद्धेश कलकत्ता से आया था।।
यमनोत्री-गंगोत्री के दर्शन के पश्चात् तुरत,
तूफानी हिमपात ने दोनों को बिलगाया था।
महा ने ढूँढ़ा इधर-उधर बुद्धेश को बहुत बार,
पर ढूँढ़ने से भी बुद्धेश कहीं नहीं पाया था।।
शिवलिङ्ग पर्वत पर दीक्षा ले अनोखी गुरुजी से,
महा नई ज्योति शिव की निज हृदय में भर लाया था।
गोमुख से कुछ दूरी पर चाय की एक दुकान पर,
महा को पुनः शिवजी ने बुद्धेश से मिलाया था।।

(3) कठिन से सरल की ओर सतत रहता है प्रवाह शुचि,
शनैः शनैः पढ़ते-पढ़ते, उत्साह-वर्द्धन होता है।
सरस-सहज-सुन्दर-सुगढ़ और स्वाभाविक भाषा में,
काशीवास-मरणान्मुक्ति का रहस्य समझाया है।।
शव की मुक्ति का शब्दचित्रों से किया है चित्रित,
कथा-उपकथाओं को अति हृदय-स्पर्शी बनाया है।
रंग-बिरंगी तरंगें करती आर्द्रित सहृदयों को,
मरणान्मुक्ति के सागर में प्रत्यक्ष लहराया है।।

Residence : C-112, Gali No. 7, Majlis Park, Adarsh Nagar, Delhi-110033 Ph.: 9868504858, 27672612
9999248014, 27672612

Dr. Krishan Dev Agrawal "Arvind"
M.A. (Hindi, Eng., Sank.), M.Ed., Ph.D. (Sankt.), Ayu. Ratna
WRITER & EDUCATIONIST

Patron : Indraprastha Press Club (Regd.), Delhi
Founder : Indraprastha Sewa Samiti (Regd.), Delhi
Millennium Health Care Society of India (Regd.), Delhi
Bhai Parmanand Education Society (Regd.), Delhi
Arvind Education & Vocational Society (Regd.), Delhi

प्रणव ओंकार स्वरूप विश्वनाथ जी की महिमा का,
अचल-अमर प्रकाश-पुञ्ज, जन-मानस में प्रभाया है।
मरणान्मुक्ति के सागर में, छिपे जो रहस्य-मोती,
उनको अपनी लेखनी से प्रत्यक्ष दर्शाया है।।
सामाजिक सम सौहार्द और आध्यात्मिक विकास का,
मानव के कल्याण हेतु, इस ग्रन्थ को रचाया है।
आध्यात्मिकता के आकाश में, सूर्य सम काशी को,
जग के कल्याण हेतु, मुक्ति का मार्ग दिखलाया है।।
अनपढ़ स्माइल चाचा, सीधे-सरल इन्सान हैं जो,
जीवन के किसी क्षेत्र में, वे भेद नहीं करते हैं।
शहनाई वादक पक्के समझते बोल धर्मों के,
समरसता के ही आनन्द में सदा वे रमते हैं।।
देश-काल-वातावरण के चित्र हैं मनोरम सभी,
पात्रानुसार ही उचित सभी व्यक्तित्व जनाए हैं।
कथा-वर्णन-कथन और संवाद आदि शैलियों में,
बड़े कथानक को विविध रूप गतिशील बनाए हैं।।
घाट-देवालय-साँड़-मुर्गी-कबूतर आदि के भी,
प्रत्यक्ष से वर्णन कर हर पाठक को रिझाया है।
जाति-धर्म-मतों और दर्शनों के करारा दर्शन,
सामरस्य का अर्थ सही सब जनों को बताया है।।
(4) गंगोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ व जगन्नाथ,
अवन्तिका, क्षिप्रा के मनोरम दृश्य दिखलाए हैं।
नर्मदा सरि, अमरकंटक और बालपुर ग्रामादि के,
सहृदयों के हृदय में सुन्दर स्वरूप झलकाए हैं।।

Residence : C-112, Gali No. 7, Majlis Park, Adarsh Nagar, Delhi-110033 Ph.: 9868504858, 27672380

Dr. Krishan Dev Agrawal "Arvind"
M.A. (Hindi, Eng., Sank.), M.Ed., Ph.D. (Sankt.), Ayu. Ratna

WRITER & EDUCATIONIST

Patron : Indraprastha Press Club (Regd.), Delhi
Founder : Indraprastha Sewa Samiti (Regd.), Delhi
Millennium Health Care Society of India (Regd.), Delhi
Bhai Parmanand Education Society (Regd.), Delhi
Arvind Education & Vocational Society (Regd.), Delhi

'गाय-गोहरी-पर्व' पर आदिवासियों के मध्य रह,
अनोखे अद्भुत चमत्कार महा ने दिखलाए हैं।
द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों के किए दर्शन कुदेशा संग,
वे चले थे काशी से, फिर काशी लौट आए हैं॥
चाण्डाल महा का निज जीवन था, हृदयविदारक अति,
पर अन्त में शिवयोगी महायोगी कहलाया है।
विश्वनाथ जी की नज़रों में, प्राणी हैं समान सब,
अपनी कृपा से महा को, महायोगी बनाया है॥
वर्णा-गङ्गा के संगम के परम पावन किनारे पर,
महायोगी का अनुपम मुक्ति-संस्कार कराया है।
लाखों की भीड़ ने श्रद्धा से किया था नमन उसे,
जिसने शिव की कृपा से मरणान्मुक्ति को पाया है॥
कुछ दोष हैं स्वाभाविक विराजमान इस पुस्तक में,
आध्यात्मिक विषयों के स्वरूप का किया विस्तार है।
क्लिष्ट शब्दों, स्वप्नों, आध्यात्मिक कथावृतियों से,
मानो कथानक-सीरि ने किया प्रस्तरों को पार है॥
आद्योपान्त महा का जीवन दुखमय व्यतीत हुआ,
कथानक के अन्त को तुरत दुखान्त बना दिया।
काशीमरणान्मुक्ति का भी तो बताना था रहस्य,
इसी लिए उसको भी कुछ सुखान्त-सा है दिखा दिया॥
लेखक-द्वय के आभारी हम सब भारतवासी,
जिन्होंने जन-कल्याण हेतु यह ग्रन्थ निर्माया है।
आद्योपान्त कथानक अध्यात्म से महा ओतप्रोत,
महा के जीवन का सर्वाङ्गीण ग्रन्थ में समाया है॥

डॉ. कृष्णदेव अग्रवाल अरविन्द
सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रवक्ता एस.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली
19/11/12

Residence : C-112, Gali No. 7, Majlis Park, Adarsh Nagar, Delhi-110033 Ph.: 9868504858, 27672380